तू जा सकती है

'सलीम' प्रदीप

तू मेरी ज़ीस्त, मेरी हमदम, मेरी हमनवा, मेरी हमसफर भी नहीं
तू कोई गीतो-गजल, कोई शेरों-नग़्मा, कोई साजों-सामां भी नहीं
तू कोई जलजला, कोई आंधी-तूफान, कोई बरसात भी नहीं
कोई तुझे रोके तो कैसे रोके, कोई समझाये तो आखिर क्या
मैं समझलूं ये फलसफा इश्क का, समझलूं तो तू जा सकती है।

मैं कहता हूं तू मेरे इश्क में कैद, तुझे दुनिया में वापिस आना होगा
तू हंसती है, हंस-हंसकर, मेरी बातों को हंसी में उड़ा देती है
तू कहती है कौन मरने के बाद दुनिया में वापिस आता है
मै कहता हूं ज़ीस्त के बाद मौत है तो पसेमर्ग जिन्दगी क्यों नहीं
यही है फलसफा इश्क का, मैं जरा समझा दूं तो तू जा सकती है।

मैं तुझे अपनी जां भी कह दूं, तो तेरी जान पे बन आती है
तुझे नजर भरके देख लूं तो तू मेरी नजरों से सिहर जाती है
जब मैं हंसने पे आमादा होता हूं, तू रोने पर उतारू हो जाती है
मेरी जां! बता, क्या इन अश्कों से मेरी जिन्दगी संवर सकती है?
ले बिखेर दे ये अश्क मुझपे बात बन जाये तो तू जा सकती है।

किन-किन फरेबों-ख्वाहिशों के इर्द-गिर्द जिन्दगी मेरी सिमटी है
किस कदर हसरतें वीरां में सोकर, उजालों में जवां हो जाती हैं
किस तीर से मारा है तूने कि मैं अब तक आहें भरता हूं
कभी सहलाता हूं जख्मों को, कभी बदले पर उतारू हो जाता हूं
जरा मैं भी तुझको घायल कर दूं, घायल होकर तू जा सकती है।

तू इतनी संगदिल भी न बन, बुते-संगमरमर देखकर तुझे हैरां हों
तू इतनी नाजुक भी न बन कि बहारें देखकर खुद पे पशेंमा हों
तू रखले संभालके ये चांदी सा बदन, ये मिल्कियत है किसी गैर की
तू यह जान भी ले कि मेरी दुनिया तेरे कदमों में बसा करती है
तू मान के पत्थर ठुकरा दे मुझको, ठुकरा के तू जा सकती है।

मैं जानता हूं तू तड़पेगी बहुत, यह तहरीर तुझसे न पढ़ी जायेगी
तू करवट बदलेगी मरमरी बिस्तर पर, रातों को तुझे नींद न आयेगी
तू समझले शोला-ए-इश्क हूं मैं, ना जिया चैन से, ना जीने दूंगा
तू हुस्न सही, तेरा हुस्न खुदादाद है, इसमें तेरा कुछ भी नहीं
कलम बंद कर दूं ये हासिले-कलाम, बंद कर दूं तो तू जा सकती है।

तू मुड़-मुड़कर न देख मुझे, ना देख यूं हैरतो-हसरत से
ना कर शर्मसार मुझे यह कहकर कि मैं अपनी तहरीर बदले जाता हूं
ना पूछ कभी क्यों गुल से तुझे, कभी कांटों से नवाजा करता हूं
ना ले इश्क का इम्तहां मेरा, मैं अभी बदहाल, बदहवास हूं मैं
मैं आ जाऊं बस जरा होश में, आ जाऊं तो तू जा सकती है।

मैं माझी हूं उस कश्ती का जिसमें तू बैठा करती है
मैं टकराता कश्ती तूफां से, कश्ती मुझसे आ टकराती है
मेरा इश्क इबादत अपने में, तेरी इजाजत की कोई दरकार नहीं
मेरी ज़ीस्त हवाले मौजों के, तेरे रहम-करमों की मोहताज नहीं
आ, खुशफहमी तेरी दूर मैं कर दूं, कर दूं तो तू जा सकती है।

तू कभी इठलाती, कभी बल खाती, मचलती है मौज नदिया की जैसे
तू कभी संभाला करती है खुद को, कभी आंचल को संभाला करती है
तेरे ही प्रेम फसानों से हर दिन, मेरी तहरीर रंगा ये करती है
मैं रफीक हूं तेरा, आशिक हूं तेरा, हमराज तेरा, सौदागर हूं
इस दिल का बयाना ले ले मुझसे, लेकर तू जा सकती है।

हम न साथ जीये हैं न साथ मरेंगे, है यही हकीकत, इसे मान ले तू
ये दुनिया तुझे जीने ना देगी, मैं तुझे कभी मरने ना दूंगा
तू समुंदर के भीतर छिपी है आग, तू शोला-बदन है, अंगूरे-चमन
इस दुनिया की हर शै है तुझसे, तू नूरे-सहर है, नूरे-मुजस्सम
तू वाकिफ कहां इस हकीकत से, गर जान गई तो जा सकती है।

तू कभी राख, कभी पत्थर, कभी चिंगारी, कभी शोला बनकर
कभी शक्लो-सूरत मेरी रखकर, कभी मेरी हसरत, किस्मत बनकर
तू हर रात मेरे ख्वाबों में आकर मेरे गीतों पे थिरका करती है
तुझको सुध-बुध कहां अब अपनी तू दीवारों से जा टकराती है
तू बन जा ख्वाब की ताबीर मेरे, बन जाये तो तू जा सकती है।

मैं मारा हूं तेरे इश्क का, तेरी दुनिया में मेरा काम नहीं
मेरी सांसों की, मेरी राहों की, कोई तो इन्तिहा, कोई होगी मंजिल
शोले भी शोले ना रहकर इक दिन राख-अम्बार बने जाते हैं
तू क्यों साया मेरा ही बनकर, आ सियाह रातों में मुझे डराती है
तू नब्ज देख ले गौर से मेरी, गर रुक जाये तो तू जा सकती है।

तू ही बता, मेरी खता है क्या, गर इश्क मर्ज है तो दवा है क्या
कोई तो होगी ऐसी तरकीब जो जाये न काटी, जिसकी काट न हो
मैं कैसे दिल पर पत्थर रख लूं, मैं कैसे खुद को समझाऊं
तू क्यों बेकार दिलासा देकर, मेरा जी बहलाती है अश्कों से
तू बहला के देख जरा जी मेरा, बहल जाये तो तू जा सकती है।

मैं कहकर तुझे बहारे-चमन तेरा जी फूलों से बहलाता हूं
फिर कहकर तुझे जाने-जहां भी मदहोश किये मैं जाता हूं
कभी तहरीरों से कागज़ काले करता, कभी शफ़्फ़ाफ़ बना देता हूं
कभी लाल गुलाब देता हूं तुझको, कभी सफेद बना देता हूं
ये है काला जादू इश्क का मेरे, तू समझ गई तो जा सकती है।

मैं आज तुझे बताता हूं कि मैं तुझे खार कहा क्यों करता हूं
कांटों की है ये सिफत बड़ी वो रूठों के दामन में उलझ जाते हैं
ये माना हमको घायल करते, पर अपने पास बुला लेते हैं
लोग इतराते फूलों को लेकर, मैं तेरी आंख में रहा करता हूं
मैं कतरा-ए-अश्क हूं आंख का तेरी, गिर जाऊं तो तू जा सकती है।

आ, अब मैं तुझे बताता हूं, मैं तुझे ताजमहल क्यों कहता हूं
तू दुखी बहुत है मेरे रंजो-गम से, हरदम मेरे गम में पागल
तभी तो कहकर ताज तुझे, मिला लाता हूं मैं तुझको तुझी से
आ, अब ये मैं राज खोल दूं तुझे महताब क्यों कहता हूं
ये कहकशां है दम से तेरे, तू जान गई तो जा सकती है।

मैं पानी पर चलके तुझे दिखादूं, अंगारों में जलके दिखा दूं
मैं बार बार दुनिया से जाकर, बार-बार मैं आकर दिखा दूं
तू बता है कौनसी नदिया, जिसका तू है खुद में साहिल
तू ही बता, कब और कहां, किस हाल में होगी मुझको हासिल
इक बार मुझे तू हो जा हासिल, हासिल होकर तू जा सकती है।

कोई तहरीर तेरी, कोई तदबीर मेरी, मेरा दिल ना बहला पाई है
कोई तूफां, कोई आंधी-वर्षा, जिदारे-इश्क गिरा ना पाई है
मैं चौबीसों घंटे, आठों पहर, जाने क्यों पगलाया रहता हूं
तू रहकर मेरी नज़रों में, फिर भी दूर रहा करती है मुझसे
तू दवा दे जरा होश की मुझको, आ जाये तो तू जा सकती है।

तू सुन ले, समझ ले, कर ले याद जुबानी मेरी इस तहरीर को
जब तुझ बिन मैं बेहद तड़पूं तो तुझको मुझसे कहना है क्या
जो झूठ नहीं, सच भी ना हो, ना हो हकीकत, ना ख्वाब ही हो
जो बात अजब हो अपने में, जो हो तस्वीर कुछ उलझी सी
तू बांधके देख दामन पत्थर से, बंध जाये तो तू जा सकती है।

ना अब तू है मेरी जां, ना जीस्त मेरी, ना सामां मौत का
ना तू हकीकत, ना ख्वाब हसीन, ना मेरे ख्वाबों की तू ताबीर
कभी तू हंसती, कभी तू रोती, कभी हंसतों को रुला भी देती है
गर तुझे पसन्द है कलम ये मेरी, तो नाम तेरे मैं वसीयत कर दूं
तू भी लिखकर देख फसाना, बन जाये ग़ज़ल तो जा सकती है।

तू खोकर चैन, खुद्दारी सारी, मेरे आगोश में आना चाहती है
तू तोड़के इश्क के बंधन सारे इस दुनिया से जाना चाहती है
तू चीज है क्या, परी कौन सी, तू चाहती क्या है मुझसे कहना
तू कभी करती है हंसकर रूख्सत, कभी देकर तू आंखों में आंसू
मैं जिस्म हूं तेरा, तू रूह है मेरी, समझ गई तो तू जा सकती है।

मैंने ये माना हम नबी नहीं, पर फरिश्तों से कुछ कम भी नहीं
हमने हदूदे-इश्क में रहकर, यहां के रस्मो-रिवाज निभाये हैं
चलके भी अलग सफीनों में, देख इक दूजे को मुस्काये हैं
जिस्म से उठती हर मांग पर हमने खूं के अश्क बहाये हैं
मैं सकते में हूं खत पढ़के तेरा, संभल जाऊं तो तू जा सकती है।

तू जवाब मेरी मुहब्बत का, बड़ी तल्ख निगाह से देती है
तूने तेगो-तबर मेरे ही लेकर, मुझे मैदाने-इश्क में दी है शिकस्त
मैं खूं से लिखता जाऊंगा नगमें जब तक तुझको पस्त न कर दूं
तू हाथों की अपनी कलमी-तलवार, रखले इसको म्यां में अपनी
मैं भी हरा दूं तुझे इश्क के मैदां में, हरा दूं तो तू जा सकती है।

तुझे जां न कहूं तो कहूं मैं क्या, कोई तौर-तरीका, तरकीब बता
जो आये मुझे करार कुछ ऐसा, फिर-फिर से हो जाऊं दीवाना
तुझ पे आरिज़ भी हैं फूलों जैसे, जुल्फ घटा की सावन हो जैसे
तू किसी भी नाजो-अदा से अपनी, मेरे दिल को बहला सकती है
तू बहलाके देख जरा जी मेरा, बहल जाये तो जा सकती है।

तू ना दे मुझको खत अपना, ना गुलाब ही दे, ना दे गुलदस्ता
मैं तेरे जिस्म की खुशबू से, तेरे जानिब खुद ही खिंचा आता हूं
तू ना उलझा मुझे हंसी खतों में, बता निगाह से, उलझन है क्या
मेरी किस्मत क्यों संगदिल इतनी, तेरी किस्मत क्यों तंगदिल इतनी
सुलझाके देख जरा जुल्फ परीशां, सुलझ जाये तो जा सकती है।

अब ये दौर खतो-किताबत का अपना, बहुत देर ना चल पायेगा
रोज-रोज रुकती सांसों का अब ये काफिला ना बढ़ पायेगा
हर रोज सिसकती तमन्नाओं को, अब सहारा ना मिल पायेगा
आज की तारीख मुझे किये पशेमां, किये शर्मसार जाती है
तहरीर आज की मैं आज ही लिख लूं, लिख लूं तो जा सकती है।

तू आई कहां से, कहां चली, तुझे मालूम हो तो बता मुझे भी
मैं कहां से आया इस दुनिया में, तुझे हो खबर तो बता मुझे भी
ना तो मैं पीरो-पैगम्बर, ना फरियादी, ना फनकार, फरिश्ता
फिर तू क्यों लिये आंखों में आंसू मेरा इन्तजार किया करती है
तू ही बता, तेरी चाहत है क्या, बतलाकर तू जा सकती है।

क्यों अटका है ये मन बेचारा, तेरे हसीन बदन के गुलिस्तां में
किसके भेजे फूल हैं ये, जो मेरे दामन में आकर हंसते हैं
तू अश्कों से भरी है शाम या शब है नाकाम मुकद्दर की
लोग कहते तुझे रात की रानी, तू रातों को फिजा महकाती है
फिर क्यों सुबह महका करती है, ये बतलाकर तू जा सकती है।

किस रंगो-बू से बनी है तू, किस सांचे में ढली है तेरी फितरत
किस शै ने आखिर तुझे घड़ा, किस फनकार ने तुझमें भरी मुहब्बत
ये मुसिव्वर समझा, ना बुततराश, तू चीज है क्या, तू शै कौनसी
तू बनकर रेखा मेरी किस्मत की, आकर बैठ मेरी मुठ्ठी में
मैं भी हंस लूं किस्मत पे अपनी, हंस लूं तो तू जा सकती है।

रोज़-रोज़ तेरे घर आने से उठती हैं निगाहें मेरे जानिब
रोज़-रोज़ मिलकर ये नज़रें, मेरी नज़रों को करती हैं नादिम
मैं इम्तहांने-इश्क में हूं बेबस, क्यों बेजार हुआ हूं अपने से
रोका करता हूं पैरों को अपने, जो उठते हैं तेरे दर के जानिब
मैं बेजवाब हूं, तू लाजवाब है, ये कहकर तू जा सकती है।

मेरे दिन का सकूं, रात चैन का, मेरी राहत मुझसे छीनने वाली
रोज-रोज डगर को अपनी, अपनी तहरीरो-तदबीर बदलने वाली
रोज-रोज बिसाते-इश्क पर, अपने रंगीं पासे फेंकने वाली
मेरे दिल में हरदम रहने वाली, मेरे ख़्वाबों में रक्सां करने वाली
तू हासिल न कर पायेगी मुझको, तू समझ गई तो जा सकती है।

तू बेशक मेरे सुलगते होंठों पर, अपने दहकते ये अंगार ना रख
तू बेशक अपने नाजुक हाथों से गालों पर बहते ये अश्क ना सोख
तू बेशक ना मिला मुझको मंजिल से, बेशक ना पहुंचा मुझे चांद के पार
पर यूं ना डूबो मेरी किश्ती रस्ते में, यूं ना बना मुहब्बत को तमाशा
मंजिल चली है ढूंढने मुझको, वो आ जाये तो तू जा सकती है।

तू बैठी दूर रेशम सी धूप में, जुल्फों को संवारा करती है
मैं बैठा अपने गमखाने में अपनी किस्मत को रोया करता हूं
रोते-रोते उम्र इक गुजरी, मैं ज़िन्दगी से हारा, ज़िन्दगी मुझसे
कासिद दबे पांव आता ही होगा, चुपचाप लिये खत हाथों में
ले तू भी पढ़ ले ये फरमान मौत का, पढ़कर तू जा सकती है।

कौन आयेगा मय्यत पे मेरी, मेरे इन्तकाल, मेरे मरने के बाद
मैं बैठा अपने तसव्वुर में फेहरिस्त मेहमानों की बनाया करता हूं
हजारों शक्लें उठती हैं जहन में, फिर खुद ही फना हो जाती हैं
दूर बैठी तेरी सूरत पे आके जाने क्यों मेरी नज़रें रूक जाती है
क्या तू भी ना आयेगी मय्यत में मेरी, ये बतलाकर तू जा सकती है।

रोज़-रोज़ साज यूं बजते भी नहीं, जांनिसार यूं मरते भी नहीं
हर शै अपनी इन्तिहा पर आकर खुद-ब-खुद रूक जाती है
तू अब तक चली है साथ मेरे, दो-चार कदम जरा और भी चल
अब मौत मेरी बहुत दूर नहीं, जानिब मेरे खींची चली आती है
जरा पहुंच जाये मय्यत मंजिल तक, पहुंच जाये तो तू जा सकती है।

तू क्यों इन तूफानी रातों में मेरे मजार के जानिब आती है
तू क्यों गुल होती शम्मा को, अपने आंचल का सहारा देती है
क्या तुझे मालूम नहीं, मुकद्दर में मेरे, अंधेरा है कोई सहर नहीं,
मैं जब तक रहा तेरी दुनिया में, तेरी मुहब्बत से महरूम रहा
अब बता तुझे कहना है क्या, खामोश हूं मैं, कहके तू जा सकती है।